श्री पार्श्व-पद्मावती आराधना

लेखिका : साध्वी डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.

प्रेरणा : साध्वी डॉ. श्री अक्षयज्योतिजी म.सा.

अनुमोदना : अनुष्ठान आराधिका साध्वी डॉ. श्री कुमुदलताजी म.सा.

अनुमोदन कर्ता : वास्तुशिल्पी डॉ. पदमकिर्तिजी म. सा.

ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने
लक्ष्मी सौभाग्यदायिनी वांछापुरणी रक्षां कुरु कुरु स्वाहाः ।
राजराजेश्वरी पद्मावती माता

ॐ अरिष्टनेमीनाथाय नम: श्री महावीराय नम: ॐ पार्श्वनाथाय नम:

जय गुरु-नंद-खुब-दिवाकर-जय गुरु-मुल-मोहन-रमेश-विजय-गौतम-जय आत्मा-नंद-देवेंद्र-शिव

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमुकारो, ।सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं,। पढ़मं हवइ मंगलमं

शब्दानुमोदना

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. एवं मालवसिंहनी पूज्या गुरुणी श्री कमलावतीजी म.सा. के दिव्य आशीष एवं मेवाड़ प्रवर्तनी पूज्य डॉ. श्री चंदनाजी म.सा. और डॉ. श्री अक्षयज्योतिजी म.सा. के आशीर्वाद से माँ पद्मावती की एकासना तप-जप आराधना की शुरुआत हुई।

हर वर्षाकाल में यह श्री पार्श्व-पद्मावती 16 शुक्रवार की आराधना बड़े ही भक्ति पूर्वक पूर्ण होती है। अनेक श्रावक-श्राविका इस में भाग लेते हैं। इस आराधना से कई भक्तों की मनोकामना माँ पद्मावती के दिव्य आशीर्वाद से पूर्ण हुई है, माँ पद्मावती की आराधना से कई लोगों के कैन्सर, टीबी, हार्ट-अटैक आदि असाध्य बीमारियों का निवारण हुआ है। यहाँ तक की पद्मावती माता की इस आराधना से कई लोगों को रिद्धि-सिद्धि-समृद्धि यश की अखण्ड प्राति हुई है। यह तप-जप करने से कर्मों की निर्जरा होती है। आप सभी से अनुरोध है, परमात्मा की भक्ति में डूबकी लगाओं और अनुमोदना करो।

मैं अंतःकरण से डुंगरवाल एवं श्री श्रीमाल परिवार साधुवाद प्रदत्त करती हूँ एवं माता पद्मावती से प्रार्थना करती हूँ कि आपकी सर्व मनोकामना पूर्ण हो और जिनशासन की हमेशा सेवा करते रहो ।

फूलों की तरह खिलते रहो, तारों की तरह चमकते रहो।
हमारी यही तमन्ना है, तुम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहो।

श्री पद्मावती व्रत कथा की विधि

शंखेश्वर में प्रभु पार्श्व का धाम है। होगा बेड़ा पार, लेगा जो इनका नाम है।
जप तप में, लगता नहीं दाम है। भजले पार्श्व को तो बनेगा तेरा बिगड़ा काम है।

वर्तमान समय में सबसे अधिक किसी का स्मरण किया जाता है, सबसेअधिक स्तोत्र की रचना हुई है तो वह है कलिकाल कल्पतरू पुरूषादानीय श्रीपार्श्वनाथ एवं उनकी अधिष्ठायिका जिन शासन रक्षिका माँ पद्मावती। जब-जब भीजिन धर्म, जिनशासन पर उपसर्ग आया तब हमारे पूर्वाचार्यों ने जैसे आचार्य भद्रबाहुस्वामीजी, आचार्य मानतुंगाचार्य, आचार्य अभयदेव, आचार्य सिद्धसेन दिवाकर आदिने भगवान श्रीपार्श्वनाथ तथा माँ पद्मावती की स्तुति की।

आज जन-जीवन अनेकविध समस्याओं से घिरा हुआ है। तनाव, टेन्शन, चिंता ऐसे समय पार्श्व-पद्मावती की आराधना की जायें तो जीवन में आधि, व्याधि,उपाधि मिटकर परम समाधि अवश्यमेव मिलती है। आज भी सृष्टि में देवतत्वविद्यमान हैं । इनकी आराधना से मनोकामनाएँ पूर्ण होती है, जीवन में करकेदेखा है। पार्श्व पद्मावती के 16 शुक्रवार करके साधना करने पर जीवन में यश-प्रतिष्ठा

पद आदि की प्राप्ति होती है और अशुभ कर्मों का क्षय होता है।

स्व-पर आत्म कल्याण की भावना प्रस्फुटित होती हैं ।अनुभव

नियम

* शुक्रवार से इस व्रत का प्रारंभ करें व शुक्रवार को लालवस्त्र या चुंदड़ी धारण करें।
* पवित्र स्थान पर कथा का वाचन करें।
* व्रत के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें।
* कथा के पश्चात् ही एकासना करें।
* खटाई का त्याग करें।
* भोजन में सफेद-लाल वस्तु अवश्य ले।
* पद्मावती की माला शुक्रवार को ही करें।
* व्रत में कंद मूल का त्याग।
* एकासना के दिन रात्रि चौविहार एवं काले वस्त्र धारण ना करें।
* अंतराय होने पर कथा वाचन और माला न करें। एकासना अवश्य करें।
* 16 शुक्रवार पूर्ण होने पर अपनी शक्ति के अनुसार धर्मस्थान में दान दें।
* लगातर 16 शुक्रवार करना अनीवार्य है बीच में खंडीत नहीं कर सकते।

श्री वज्रपंजर स्तोत्र (आत्मरक्षा मंत्र)

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं। आत्मा रक्षा करं वज्रं पंचराभं स्मराम्यहं ।।1।।
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसिस्थितं । ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुख पटवरम् ।।2।।
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षाति शायिनी। ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुध हस्तयोदृढ़ं ।।3।।
ॐ नमो लोए सव्वं साहूणं, मोचके पादयो शुभे। एसो पंच नमुक्कारो शिला वज्रयमयी तले ।।4।।
सव्व पाव प्पणासणो, वप्रोवज्रमयोबहिं, मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिका ।।5।।
स्वाहातं च पदं ज्ञेयं, पढ़म हवई मंगलम् । वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देह रक्षणे ।।6।।
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी। परमेष्ठी पदोद्भूता कथिता पूर्व सूरिभिः ।।7।।
यश्चैव कुरुतेरक्षां, परमेष्ठि पदेः सदा। तस्य न स्याद् भयं व्याधि, राधिश्चाऽपि कदाचनः ।।8।।

कथा प्रारंभ करने से पहले 9 बार नवकार मंत्र पढ़े।
तथा 1 बार आत्मरक्षा मंत्र पड़े। तीन बार उवसग्गहरं स्तोत्र पढ़े।

महाप्रभाविक उवसग्गहरं स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं पासं, वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं।।1।।
विसहर फुल्लिंगमंतं, कण्ठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ।।2।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होई। नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।3।।
तुह सम्मते लब्दे, चिंतामणि कप्पपाय बब्भहिये। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4।।
इह संथुओं महायस्स! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।5।।

श्री पार्श्वनाथ मंत्र (ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय नमः)

श्री पद्मावती मंत्र 'ॐ ह्रीं श्रीं माँ पद्मावती नमः

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमो नमः।

ॐ पद्मावत्यै पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वांछापूरणी
ऋद्धि सिद्धिं जयं जयं कुरु कुरु स्वाहा:

कथा – ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः

प्राचीन काल से ही वाराणसी भारत की सुप्रसिद्ध नगरी रही है। जिसका अतीत अत्यंत गौरवमय रहा है। श्रमण संस्कृति एवं ब्राह्मण संस्कृति के संवर्द्धन का परिपोषण का श्रेय उसे प्राप्त हुआ है। पवित्र पावन गंगा नदी के उत्तरी किनारे पर बसा संस्कृति, साहित्य और इतिहास की नगरी वाराणसी में राजा अश्वसेन की महारानी, वामादेवी की रत्नकुक्षी से 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का पौष कृष्ण दसमी के दिन जन्म हुआ। बालक का लालन-पालन वैभव विलास युक्त वातावरण में हुआ। बालक का मुख मण्डल सूर्य की तरह तेजस्वी और चन्द्रमा की तरह सौम्य था। हृदय पुष्प की पंखुड़ीयों सा कोमल था। शुक्ल पक्ष के चांद की तरह बालक पार्श्व बढ़ रहे थे। कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा के कारण सब के मन को मोह लिया।

माता-पिता जल्दी ही अपने पुत्र को परिणय बंधन में बांधना चाहते थे। अतः कुशस्थल (कन्नोज) के राजा प्रसेनजीत की सुपुत्री प्रभावती के साथ धमूधाम से पाणिग्रहण करवाया। पार्श्वकुमार संसार में रहकर भी संसार से अलग-अलग अर्थात् निर्लेप रहते थे।

एक समय राजकुमार गवाक्ष में बैठे थे। एक ही दिशा में लोगों को जाते देखा। आज क्या प्रसंग है, लोग कहाँ जा रहे है?

अनुचर ने बताया- राजपुत्र! नगर के बाहर कमठ नामक एक महान् तपस्वी आया हुआ है। जो पंचाग्नि तप कर रहा है। उसके दर्शन हेतु सब जा रहे है। राजकुमार पार्श्व भी उसे देखने पहुँचे। राजकुमार ने देखा तापस पंचाग्नि तप कर रहा है। चारों दिशा में अग्नि जल रही है। अग्नि कुण्ड में बड़े-बड़े काष्ट जल रहे हैं। उसमें सर्प जोड़ा भी जल रहा है। सर्प को जलते देख पार्श्व का कोमल हृदय करूणा से द्रवित हो गया। तापस के इस विवेकशून्य क्रियाकाण्ड को देख पार्श्वकुमार ने कहा - हे तपस्वी! यह कैसा अज्ञान तप है। जीवों को भस्म कर तुम अपना कल्याण चाहते हो? दया के बिना धर्म कहाँ ? क्रोध और अहंकार में भरकर तपस्वी बोला - राजकुमार! तुम धर्म को नहीं समझते। राजपुत्र तो हाथी-घोड़ों पर क्रीड़ा करना जानते हैं। युद्ध करना जानते हैं। धर्म के रहस्य को तो हमारे जैसे तपस्वी ही समझते हैं।

क्या तुम मेरी धुनी में किसी जीव को जलता हुआ बता सकते हो? तभी राजकुमार बोलता है ''अरे तापस इस बड़े लक्कड़ में सांप जल रहा है। मेरा कथन सत्य है।''

अनुचर को आदेश देकर लक्कड़ को सावधानी से बाहर निकलवाया और लक्कड़ चीरा तो जलता हुआ सर्प युगल बाहर निकला। जो

एकदम मरण जैसी स्थिति में ही था। उसी समय नवकार महामंत्र का संक्षेप रूप सुनाया।

"ॐ असिआउसा नमः" सर्प युगल समाधिपूर्वक मृत्यु प्राप्त कर धरणेन्द्रपद्मावती बने। लोगों ने कमठ की विवेक शुन्य तपस्या की भत्सर्ना की। वह तपस्वी बहुत रुष्ट हुआ। अज्ञान तप के कारण वह मरकर मेघमाली नामक देव बना।

पौष कृष्णा एकादशी को, पार्श्व राजकुमार ने 30 वर्ष की उम्र में, वाराणसी केबाहर, आश्रम पद उद्यान में, विशाखा नक्षत्र में, 300 राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की।दीक्षा के पश्चात् पार्श्व विहार करते हुए एक रात्रि वृक्ष के नीचे खड़े थे। पूर्वभव की वैरभावना को स्मरण कर मेघमाली देव (कमठ) प्रभु पार्श्वनाथ को संकट, यातना देने के लियेभयंकर जलवृष्टि करता है। ध्यान मग्न प्रभु पार्श्वनाथ की नासिका तक पानी आ गया फिरभी वे अविचल ध्यान मुद्रा में खड़े थे। धरणेन्द्र देव और माँ पद्मावती देवी ने अपने ज्ञान से इस यातनामय भयावह प्रसंग को देखा और प्रभु की सेवा में उपस्थित हो गये। देवी माँ पद्मावती ने अपनी नाग देह से कुण्डली बना पार्श्व प्रभु को ऊपर उठाया और धरणेन्द्रने अपने सात फणों का छत्र कर उपसर्ग निवारण किया।

धरणेन्द्र-पद्मावती को देख मेघमाली पराजित हुआ। मेघमाली

देव ने प्रभु से अपने अपराध की क्षमा मांगी। दीक्षा के 83 दिन बाद अर्थात् 84वें दिन प्रभु पार्श्वनाथ को चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन विशाखा नक्षत्र में केवल ज्ञान प्राप्त हुआ तथा श्रावण शुक्लाअष्टमी के दिन सर्व कर्म क्षय करके सिद्ध बने। जल संकट के निवारण के बादनिरंतर धरणेन्द्र - पद्मावती प्रभु की पर्युपासना सेवा करने लगे और शासनअधिष्ठाता के रूप में प्रसिद्ध हो गये। तब से वर्तमान तक जो भी श्रद्धाभाव सेपार्श्व प्रभु की स्तुति या जाप करता है उसकी सर्व मनोकामना माँ पद्मावतीअवश्य पूर्ण करती है। विशेष साधना पर कभी भक्त को प्रत्यक्ष दर्शन देती है।संपूर्ण विधियुक्त जप-तप के साथ प्रभु पार्श्वनाथ एवं माँ पद्मावती की यह कथापढ़ने सुनने और सुनाने वाले सभी को मंगलमय हो, आनंद हो।

आव्हानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं नैव जानामि, क्षमस्व देवी परमेश्वरी ।।
सर्व मंगल मांगल्य, सर्व कल्याण कारणं ।
प्रधानां सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।।

श्री माँ पद्मावती आरती

(तर्ज : ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय पद्मावती माता, अंबे जय पद्मावती माता,
तव दर्शनकर माता, पाऊं सुखसाता ||धृ||
पारसनाथ बिराजे, शीश तेरे माता ||अंबे||
इन्द्र, नरेन्द्र फणिन्दर है तुझको ध्याता ||1||
शासन रक्षक तुम हो, दुखनाशक माता ||अंबे||
जय, विजय, सुत लक्ष्मी, सब सिद्धि दाता ||2||
तूँ गौरी, तूँ तारा, दुर्गा चामुण्डा ||अंबे||
विविध रूप हैं तेरे, अम्बा जगदम्बा ||3||
तुम सुमिरण से माता, संकट टल जाता ||अंबे||
घर-घर होवे मंगल, तू आनंद दाता ||4||
संकट मोचन तू है, आया मैं शरणे ||अंबे||
भक्त हजारों लाखों, आवे तुम चरणे ||5||
मन में मुरादे लेकर, श्रद्धा से आते ||अंबे||
'चन्दन' दर्शन करके अक्षय फल पाते ||6||

श्री पद्मावती चालीसा

पार्श्वनाथ प्रसेविका, माँ पद्मावती मात।। प्रत्यक्ष परचा अनुभवे, नाम जगत विख्यात।।

माँ पद्मावती मंगलकारी ।। नाम-मंत्र है आनन्दकारी ।।1।।
पार्श्वनाथ अधिष्टात्री देवी ।। सुरनर किन्नर सबकी सेवी ।।2।।
कंचन वरणी अद्भुत क्रान्ति ।। देती भक्तजनों को शान्ति ।।3।।
कुर्कुट नाग की असवारी ।। चार भुजाये सुंदर धारी ।।4।।
कमल फूल हे हाथे सोहे ।। भाविक जनो का मनड़ा मोहे ।।5।।
बीजोरा फल बीजे हाथे । रहती भक्त जनों के साथे ।।6।।
त्रीजे हाथ अंकुश है धारा । तेरी महिमा का नही पारा ।।7।।
माला चौथे हाथ रचाऊं। सुबह शाम में आरती गाऊँ ।।8।।
केशर चन्दन भरी कटोरी ।। सेवा पूजा हरदम तोरी ।।9।।
अन्तर हृदय भाव है आवे । मूर्ति देख मन आनन्द पावे ।।10।।
अवधि ज्ञानी-अन्तर ज्ञात्री ।। दीन जनों की तू है भात्री ।।11।।
नगर होम्बुजा आप विराजो ।। पद्मावती के पीठ में छाजो ।।12।।
वाव मध्य से प्रकटी प्रतिमा ।। ऊपर पार्श्वनाथ की प्रतिमा ।।13।।
झाड़ नगोड़ा है सुखदाइ।। उसके पास ही मूर्ति बिठाई ।।14।।
राजा रंक ये मन ध्यान लगाया।। अक्षय धन, अक्षय सुख पाया ।।15।।
प्रत्यक्ष परचों देखी माता ।। शंखेश्वर नरोड़ा जगख्याता ।।16।।
पालीताणा चारूप बिराजे ।। वालकेश्वर की महिमा है गाजे ।।17।।
जब कोई भक्त ध्यान है धरता । पा लेता जीवन में अमरता ।।18।।

प्रेम भरी माँ नजरों राखो। दुःख दारिद्र मिटा दे वांको ।।19।।
अणिमा गरिमा लब्धि धारी । चैत्य दानव दुष्ट निवारी ।।20।।
पद्म कमल पर आप बिराजो ।। दशों दिशाओं में ही छाजो ।।21।।
वैमानिक देवी उपकारी ।। घर विमान माँ गगन बिहारी ।।22।।
जब-जब याद करूं माँ पद्मा ।। सर्व सहायक बनती माँ पद्मा ।।23।।
लाल वर्ण माँ रूप स्वरूपी ।। दर्शन देती आप अरूपी ।।24।।
कमलाकारी आसन ठाया ।। उपर सर्प तणी है छाया ।।25।।
मुकुट मनोहर शिर पर सोहे । नाक में नथड़ी मनड़ों मोहे ।।26।।
हार गले में हीरो जड़ियों। झगमग ज्योति ज्योते चढ़ीयों ।।27।।
ॐ ह्रीँ नमः का जाप जपना ।। पूरा करे माँ उसका सपना ।।28।।
तेरी शक्ति अनुभवी जाने ।। मन ही मन आनंदने माने ।।29।।
आधि व्याधि सब हर नारी ।। श्रद्धा से आवे नर नारी ।।30।।
पुत्र नहीं वो पुत्र पावे । इच्छायें पूरण हो जावे ।।31।।
धरणेन्द्र अधिपति तो है सोहे ।। तू जग जननी मनड़ो मोहे ।।32।।
शुक्रवार ने सहायक बनती ।। सर्व विघ्न तू सबका हरती ।।33।।
लाल चुनड़ी ओढ़ी माता ।। तूं है विश्व में सबकी त्राता ।।34।।
पद्मावती माँ पद्मविलासी । पाताल लोक माँ आप निवासी ।।35।।
सुन लेना माँ अरजी मेरी ।। फैल रही है महिमा तेरी ।।36।।
जीवन में सुख शान्ति देना ।। भक्तों पर बरसाते रहना ।।37।।
सेवक जो तेरे चरणे आया ।। मनवांछित फल उसने पाया ।।38।।
चालीसा का नित पाठ करेगा । उस पर माँ का हाथ रहेगा ।।39।।
दर्शन नित्योदय यश वर्षाया । चन्द्रानन की शीतल छाया ।।40।।

माँ पद्मावती के 16 शुक्रवार ऑनलाईन एकासन तप आराधना

ॐ ह्री श्री धरेन्द्र-पद्मावती सहिताय। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमो नमः।।

एकासन तप आराधना करके अपने जीवन के सारे दु:ख मां पद्मावतीजी के चरणो मे रखके
अपने जीवन मे खुशहाली की बहार लाये,

पावनसानिध्य

श्रमण संघीय जैन दिवाकर मालवसिंहणीं पुज्य गुरुणी श्री कमलावतीजी म.सा की सुशिष्या

अनुष्ठान आराधिका साध्वी डॉ. कुमुदलताजी म.सा स्वर सम्राज्ञी साध्वी डॉ महाप्रज्ञाजी म.सा.,
वास्तुशिल्पी साध्वी डॉ.पद्मकीर्तिजी म.सा., विद्याभिलाषी साध्वी राजकीर्तिजी म. सा

श्री पार्श्व पद्मावती आराधना समिती

महाराष्ट्र

मुबंई :- प्रभारी सौ. प्रेमा सिघंवी
प्रभारी सौ. संगीता पगारीया
प्रभारी सौ. पिंकिजी कच्छारा

डोम्बिवली कल्याण :- प्रभारी सौ. प्रियंका डांगी
प्रभारी सौ. वैशाली चपलोत

पुना :- प्रभारी श्री. संजय लुणिया
प्रभारी सौ. वृद्धि डुंगरवाल

अहमदनगर :- प्रभारी सौ. मोनाली डुंगरवाल
प्रभारी सौ. आरती सुराना
प्रभारी सौ. सोनाली डूंगरवाल

औंरगाबाद :- प्रभारी सौ. दर्शना जैन
प्रभारी सौ. राधिका जैन

सोनई :- प्रभारी सौ. वैशाली लुनीया

करमाळा :- प्रभारी सौ. ज्योती सियाल

जामखेड :- प्रभारी सौ. सविता कटारीया

गुजरात

वापी :- प्रभारी सौ. वर्षा बोलीया
प्रभारी सौ.नीतु रायसोनी

अहमदाबाद :- प्रभारी सौ. पींकी संकलेचा
प्रभारी सौ. संगिता जैन

राजस्थान

अजमेर :- प्रभारी सौ. मधु रांअका
चित्तोड :- रेखा नाहार

तमिलनाडु

कोयम्बतूर :- प्रभारी श्री. मनोज हिंगड
चैन्नई :- प्रभारी सौ. सपना कोचेटा
ऊटी :- प्रभारी सौ. नन्दा कोठारी

कर्नाटका

बंगलौर :- प्रभारी सौ. वर्षा टोडरवाल
प्रभारी सौ. प्रभा खाबिया
मैसूर :- प्रभारी सौ. बबिता कोठारी
प्रभारी सौ. संतोष मुथा

आंध्रप्रदेश

हैदराबाद :- प्रभारी सौ. सविता लुणावत

श्री पार्श्व पद्मावती एकासन ऑनलाईन आराधना

नियमावली

1) मिडीया के माध्यम से एकासन तप विधी साध्वीजी पद्मकीर्तिजी म.सा.द्वारा कराई जायेगी.
२) प्रभारी के पास आप अपना नाम गाव का नाम और वॉट्सअप नंबर दिरावे.
३) विधी करते वक्त महिलाये लाल वस्त्र पहनकर ही करे.
४) किताब मे पेज नं. ६, दिये गये नियमोका पालन करना अनिवार्य है.
५) एकासन तप विधी कि किताब मोबाईल पर पीडीफ द्वारा भेजी जायेगी.
६) ऑनलाईन ग्रुप के माध्यम से आराधक की हर शुक्रवार उपस्थित गुगल फ़ॉर्म द्वारा ली जायेगी.
७) बहने पवित्रता का विशेष ध्यान रखे. ८) खटाई का सर्वथा प्रकार से त्याग है.
९) एकासन तप पुर्णाहुती की विधी ऑनलाईन कराई जायेगी.
१०) साध्वीजी के सानिध्य मे पुर्णाहुती को आवश्य पधारे.

नोट:- किसी भी शहर मे २१ आराधक होंगे वहां एक सेंटर के रुप मे दिया जायेगा एक मीडिया प्रभारी बनकर मुख्य प्रभारी से संपर्क करे. उपर दिये गये शहर के अलावा नाम देने के लिये प्रमुख प्रभारी से संपर्क करे

प्रमुख प्रभारी

सौ. सपना कोचेटा 7200114893 सौ. वर्षा टोडरवाल 9513150008 सौ. ज्योती कोठारी 9595180655
श्री. राजेश बाफना 7200000160 श्री. सुनील छाजेड़ 9941108886 श्री. मनोज हिंगड 9894837679

श्री पार्श्व पद्मावती आराधना समिती एवं स्थानीय श्री संघ

एकासन चालु करने कि तारीख

1. .... 11. ....
2. .... 12. ....
3. .... 13. ....
4. .... 14. ....
5. .... 15. ....
6. .... 16. ....
7. .... 17. ....
8. .... 18. ....
9. .... 19. ....
10. .... 20 ....

हार्दिक मंगलकामनाओं सहित

वसंतलाल डुंगरवाल

सुपुत्र : सचीन-मोनाली, विनीत-वृद्धी,

सुपौत्र : तनुष, रियांश सुपौत्री : गिना-अनाया

दिव्य आशीर्वाद

जैन दिवाकर पू. गुरुदेव
श्री चौथमलजी म.सा.

उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरुदेव
श्री केवलमुनिजी म.सा.

पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव
श्री. अम्बालालजी म.सा.

मालवसिंहनी पूज्या गुरुणी
श्री कमलावतीजी म.सा.

मंगल आशीर्वाद

अनुष्ठान आराधिका साध्वी
डॉ. श्री कुमुदलताजी म.सा.

महासती स्वर साम्रज्ञी
डॉ. श्री महाप्रज्ञाजी म.सा.

महासती वास्तुशिल्पी
डॉ. श्री पद्मकीर्तिजी म.सा.

महासती विद्याभिलाषी
श्री राजकीर्तिजी म.सा.

हार्दिक मंगलकानाओं सहित

मातुश्री स्व. गंगाबाई स्व. वक्तावरमलजी की पावन स्मृति मे

मीनादेवी लोकेश कुमार कागरेचा

सुपुत्री चंचल मोहीतजी मेहता

सुपुत्री दिक्षा विशालजी इटोदिया

दोइत्री जीयाना

डोंबिवली (घोडच)